RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

जालन्धर

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 42
सृष्टि संवत् 1960853116
17 जनवरी 2016
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

वर्ष-72, अंक : 42, 13/17 जनवरी 2016 तदनुसार 4 मार्गशीर्ष सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

शरीर त्याग से रक्षा

-ले० श्री स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम्।
मिथो यत्त्यागमुभयासो अग्मन्नरस्तोकस्य तनयस्त सातौ।।

-ऋ० ४।२४।३

शब्दार्थ-तन्वः-शरीरों को **रिरिक्वांसः**-निरन्तर रिक्त करते हुए **नरः**-मनुष्य **तम्+इत्**-उसी को **समीके**-जीवन-संग्राम में **विह्वयन्ते**-विशेष रूप से बुलाते हैं और उसे ही **त्राम्+कृण्वत**-रक्षक करते, बनाते हैं। **तोकस्य+तनयस्य**-बाल बच्चों के **सातौ**-प्राप्ति के निमित्त **उभयासः**-दोनों प्रकार के **नरः**-मनुष्य **यत्**-यतः **मिथः**-परस्पर **त्यागम्**-त्याग को **अग्मन्**-प्राप्त होते हैं।

व्याख्या-संसार में जब मनुष्य सब ओर से निराश और हताश हो जाता है, तब उसे अनन्य-शरण, अशरणशरण, शरण्यों के शरण्य, दुःखविशरण, सुखकरण भगवान् का स्मरण आता है और वह उसकी शरण में जाता है।

संसार में यदि झगड़े न हों, एक का दूसरा वैरी न हो, तो कदाचित् कोई भी किसी को अपना सहायक न बनाए। जब कोई विघ्न-बाधा है ही नहीं, अपनी निश्चित धारणा में विधारणा या विदारणा की कोई सम्भावना नहीं, तब क्यों किसी से सहायतार्थ प्रार्थना की जाए ? किन्तु संसार में युद्ध है। एक-दूसरे का विरोध है। विरोधी एक-दूसरे को नीचा दिखाने के प्रयत्न में लगे हैं, इसका नाम है युद्ध, संग्राम।

ऐसा संग्राम तो मनुष्य का जीवन भी है। इन्द्रिय और देह मानों आत्मा को अपने अधीन करने में लगे हैं। प्रचेताः आत्मा समझने लगा है, देह और इन्द्रियां मेरे लिए हैं। इन्हें मेरे निर्देशानुसार चलना चाहिए। दैवभाव आसुरभावों को कुचलना चाहते हैं, आसुर दैवों को मसलना चाहते हैं। जाने दो इस दैवासुर-संग्राम को। मनुष्य को अपना जीवन बनाए रखने के लिए प्रकृति से कितना युद्ध करना पड़ता है। युद्ध के लिए सहायक चाहिएं। भगवान् ही सबसे महान् सहायक है। अतः-'**तस्मिन्नरो विह्वयन्ते समीके**' सभी नायक जीवन-संग्राम में उसे पुकारते हैं। नेता ही क्यों, वरन्-

इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम्।
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते।।

-ऋ० ४।२५।८

उत्तम, अधम और मध्यम इन्द्र को बुलाते हैं। चलने वाले या चढ़ाई करने वाले इन्द्र को बुलाते हैं। निराश, हताश इन्द्र को बुलाते हैं। नष्ट होते हुए इन्द्र को बुलाते हैं। लड़ाके, युद्ध करने वाले इन्द्र को पुकारते हैं। वाज के अभिलाषी-ज्ञान, धन, जन, बल के अभिलाषी इन्द्र को बुलाते हैं। आशावादी, निराशावादी, नाशोन्मुख, युद्धतत्पर, ज्ञान-प्रवण, ध्याननिमग्न, उत्तम, अधम, मध्यम सभी भगवान् का आह्वान कर रहे हैं। यहां आकर सभी समान हो जाते हैं। इसके द्वार पर सभी याचक हैं। याचक याचक ही है। भगवान् के द्वार पर आते हुए-**रिरिक्वांसस्तन्वः अग्मन्**-शरीरों को खाली करके पहुंचे हैं। खाली हाथ जाएंगे, तभी तो कुछ पाएंगे। रिक्त शरीर जाकर बता रहे हैं कि कहीं से कुछ नहीं मिला। तू हमारी झोली भर दे, तेरे द्वार से कोई खाली नहीं लौटता।

युद्ध में योद्धा कवच धारण करके जाता है। शत्रु के अस्त्र-शस्त्र से उसे वह कवच बहुत कुछ बचाता है। योद्धा जब इसके द्वार पर मांगने जाता है तब तनूत्राण-कवच उतारकर जाता है, क्योंकि वह उसे ही-**तन्वः कृण्वत त्राम्**-शरीर का रक्षक-तनूत्राण कवच बनाता है। उस सरकार के दरबार में त्याग की भेंट लेकर जाना होता है। **मिथो यत्त्यागमुभयासो अग्मन्**-दोनों मिलकर त्याग को प्राप्त होते हैं। तभी तो ऋषियों ने कहा-**त्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुः** (उपनिषत्) कईयों ने त्याग से मोक्ष पाया। स्वयं भगवान् ने कहा है-**यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्** (यजुः०)-त्याग के द्वारा समर्थ होवे, सफल होवे। लोग त्याग करके उसके राग गाते रहते हैं। परिचित, अपरिचित सभी को अपने उस त्यागाभास का आभास दिलाते रहते हैं। त्यागियों को शिरोमणि भगवान् का आदेश है, त्याग का भी त्याग करो, तभी सफलता मिलेगी। भगवद्भक्त कह गए हैं-**धर्मः क्षरति कीर्तनात्**-चर्चा करने से पुण्यकर्म का नाश होता है। कस्तूरी का परिचय सुगन्धि से होना चाहिए, न कि गान्धिक उसका बखान करे। भगवान् के दरबार में जाते हुए अहंता, ममता, अहंकार का त्याग तो अवश्य ही करना होता है। अहंकार को साथ ले जाकर वहां से विफल मनोरथ आना पड़ता है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

ईश्वर तथा आस्तिकता

-ले० वेदाचार्य डॉ० रघुवीर वेदालंकार पूर्व उपाचार्य, रामजस कालेज, दिल्ली

लोक में प्राय: यही समझा जाता है कि जो ईश्वर को मानता है, वह आस्तिक तथा न मानने वाला नास्तिक है। यह दोनों शब्द पाणिनी मुनि के सूत्र 'अस्ति नास्ति दिष्ट मति:' (अ. 4.4.60) द्वारा सिद्ध होते हैं। काशिकाकार ने इस सूत्र की व्याख्या में लिखा है कि 'परलोक है, जिसकी ऐसी मति है, वह आस्तिक तथा परलोक को न मानने वाला नास्तिक है। यहां पर ईश्वर आस्तिक तथा परलोक को न मानने वाले का नाम नहीं लिया गया है। यह परिभाषा पूर्व परिभाषा से अधिक व्यापक तथा परिमार्जित हैं। परलोक को मानने का अर्थ जीवात्मा को नित्य, शाश्वत स्वीकार करना है, क्योंकि जीवात्मा नित्य होने पर ही तो परलोक में जा सकेगा अन्यथा शरीर के साथ ही नष्ट हो जाने पर तो उसके परलोक गमन का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। यह परिभाषा इसलिए करनी पड़ी, क्योंकि चार्वाक तो नित्य अविनाशी आत्मा की सत्ता का ही निषेध करते हैं। एक चार्वाक ही नहीं, अपितु संसार में अन्य भी अनेक व्यक्ति आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करते। आधुनिक वैज्ञानिक भी इसी विचारधारा से ग्रस्त हैं।

दूसरी बात यह है कि जो व्यक्ति आत्मा की सत्ता को मानता है उसे ईश्वर को भी अनिवार्य रूप से मानना पड़ेगा, ईश्वर को माने बिना प्रक्रिया पूर्ण होगी ही नहीं। परलोक मान लिया तो परलोक में जाने वाला आत्मा भी मानना पड़ेगा। आत्मा मान लिया तो उसे सुख-दु:ख का भोक्ता माना जाएगा जो कि प्रत्यक्ष सिद्ध है। आत्मा को सुख-दु:ख का भोक्ता मानने पर उसके फलों का दाता मानना पड़ेगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति बुरे कार्य करके स्वयं दण्ड नहीं लेना चाहता। इसलिए जीवों के फल का दाता परमेश्वर को मानना पड़ेगा। इस प्रकार परलोक को मानकर आत्मा तथा परमेश्वर का मानना स्वत: सिद्ध हो जाता है।

आस्तिक नास्तिक की एक तीसरी परिभाषा भी है। वह इन दोनों परिभाषाओं से उत्कृष्ट तथा पूर्ण है। वह इस प्रकार है-

''नास्तिकों वेदन्दिक:।'' यह मनु का वचन है। पूरा श्लोक इस प्रकार है-

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विज:।
स साधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिको वेद निन्दक:।।

-मनुस्मृति 2.88

अर्थात् जो व्यक्ति वेद तथा स्मृति को प्रमाण नहीं मानता, उसे सज्जन लोग समाज से बहिष्कृत कर दें, क्योंकि वह नास्तिक हैं। यह पूर्ण परिभाषा है। जो व्यक्ति वेद को मानेगा, वह परलोक को भी मानेगा तथा आत्मा परमात्मा का भी मानेगा क्योंकि वेद इन सबका प्रतिवादक है। वेद को न मानने पर हानि यह होगी कि इच्छानुसार ईश्वर का कोई भी स्वरूप कल्पित कर लिया जाएगा। इस प्रकार तो विभिन्न प्रकार के ईश्वरों की कल्पना भी कर ली जाएगी, जैसा कि आजकल हो रहा है। इन ईश्वरों को आज्ञाएं भी पृथक-पृथक ही हैं। उदाहरणार्थ मुसलमानों के खुदा ने कुरान द्वारा यह शिक्षा भी दी है कि गैर मुस्लिमों को मारो, काटो। आतंकवादी कुरान के नाम पर ही खुदा का साम्राज्य स्थापित करने के लिए यह सब कर रहे हैं। अभी नहीं, भूतकाल में भी ऐसा किया गया है। औरंगजेब आदि शासकों ने कुरान तथा खुदा के नाम पर ही तो नरसंहार किया था। कहने को तो वे भी आस्तिक थे तथा आज के आतंकवादी भी आस्तिक हैं। बिन लादेन भी आस्तिक हैं, किन्तु ऐसी आस्तिकता किस काम की जिससे कि संसार ही नष्ट होने लगे ? यह सब इसी कारण हुआ, क्योंकि वेद के स्थान पर कुरान, बाईबिल आदि को प्रमाण माना गया। इससे ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान हो ही नहीं सकता। शाट्यारूपनिषद में कहा गया है-नावेदविन्मनुते तं बृहत्तम्। अर्थात् जो वेद को नहीं जानता वह उस महान ब्रह्म के सच्चे स्वरूप को नहीं जान सकता। ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न जानने के कारण ही संसार में लड़ाई-झगड़े, मार-काट हुए हैं, अभी भी हो रहे हैं तथा आगे भी होते रहेंगे। इसलिए मनु ने अत्यन्त दूरदर्शिता से कहा था-नास्तिकों वेद निन्दक:। अर्थात् वेद का निन्दक या वेद को न मानने वाले व्यक्ति नास्तिक है तथा वेद को मानने वाले आस्तिक हैं। यह परिभाषा पूर्ववर्ती दोनों परिभाषाओं से व्यापक तथा सम्पूर्ण है। ईश्वर को न मानने वाला नास्तिक है, यह पूर्ण परिभाषा नहीं है।

वेद को न मानने पर ईश्वरों की कल्पना का एक अन्य उदाहरण यह है कि जैन लोग किसी एक ही सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान ईश्वर को नहीं मानते, अपितु जो भी अर्हन पदवी को प्राप्त कर लेता है, जैन मतानुसार वह ईश्वर ही बन जाता है। इस प्रकार जैन-मत में अनेक ईश्वरों की कल्पना की गई है। यह कल्पना वेद को न मानने के कारण ही की गई है। वेद में केवल एक ही सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक ईश्वर का प्रतिपादन है, न कि नाना ईश्वरों का। इसलिए मनु ने ठीक ही कहा है-नास्तिकों वेद निन्दक:। वेद के इसी महत्त्व को देखते हुए सन्यासी के लिए भी वेदाध्ययन को अनिवार्य घोषित करते हुए मनु कहते हैं-''संन्यसेत सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्।'' अर्थात् सन्यासी अन्य सभी कार्यों का तो परित्याग कर सकता है किन्तु वेद को नहीं छोड़ सकता। महर्षि दयानन्द ने भी कदाचित इसलिए वेद के पठन-पाठन को परम धर्म घोषित किया है।

कुछ लोग कहते हैं. कि स्वर्ग-नरक के रूप में कर्मफल दाता के रूप में ईश्वर को मानने की कोई आवश्यकता नहीं। हमें नैतिकता के आधार पर ही शुभ कर्म करने चाहिएं जिससे कि अन्य व्यक्तियों को सुख मिले। यहां पर प्रश्न है कि अन्य व्यक्तियों का स्वरूप क्या है ? हमारे शरीर आत्मा रहित जड़ पदार्थ मात्र है ऐसा नहीं माना जा सकता। यदि इन्हें आत्मा वाला माना जाएगा तो इसके साथ ही परलोक तथा कर्मफल प्रदाता ईश्वर की सत्ता स्वत: ही सिद्ध हो जाती है।

यदि वस्तुत: ईश्वर का अस्तित्व है ही नहीं तो भी ईश्वर को मानने में बहुत लाभ है। ईश्वर को कर्मफल दाता समझ कर व्यक्ति बुरे कार्यों के करने से बचेगा, क्योंकि उसे दण्ड का भय रहेगा। प्रश्न है कि आजकल अपराधी अपराध करने से क्यों नहीं बचते ? इसका यही उत्तर है कि उनका ईश्वर तथा उसकी न्याय व्यवस्था पर अटूट विश्वास नहीं है। जिनका इन पर अटूट विश्वास है, वे बुरे कार्य करते ही नहीं। ईश्वर को मानने का दूसरा लाभ यह है कि इस प्रकार हम अपने साथ एक शक्तिशाली सहायक को पाते हैं। व्यक्ति के सामने हताशा, निराशा के अनेक अवसर आते हैं, जब वह बिल्कुल टूट जाता है, उस समय आस्तिक व्यक्ति परमेश्वर को सहायक मानकर कष्टों से नहीं घबराता है। परमेश्वर उसकी सहायता करता है। नास्तिक व्यक्ति ऐसे समय अपने आपको स्थिर नहीं रख सकता। इसी दृष्टि से उपनिषदों में कहा गया है-''एतदालम्बनं श्रेष्ठम्।'' परमेश्वर का अवलम्बन लेना श्रेष्ठ है। इसलिए व्यक्ति को आस्तिक होना चाहिए तथा सच्ची आस्तिकता वेद को परम प्रमाण मानने में है, केवल ईश्वर को मानने में नहीं।

ईश्वर को केवल शास्त्रीय रूप में मानना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु हमें उसकी अनुभूति भी होनी चाहिए। ईश्वर सर्वव्यापक है, वह मेरे अन्दर बाहर सर्वत्र का व्याप्त है, पुनरपि किसी भी क्षण यदि मेरा उससे तादात्म्य स्थापित नहीं होता तो सच्चिदानन्द स्वरूप, दयालु, निराकार आदि-आदि कहना किस काम का ? ईश्वर सर्वभूतानाम् हृद्देशेऽर्जुनत्तिष्ठत्ति-ईश्वर सभी के हृदय में विद्यमान है। एक चोर, वधिक, पापी, अत्याचारी व्यक्ति तो उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर ही नहीं सकते। यदि मेरी स्थिति भी वैसी ही है तो मेरे तथा उन लोगों के बीच अन्तर ही क्या रह गया। यही मान्यता है कि ईश्वर की अनुभूति होती है। इसके लिए उच्च कोटि का शास्त्रीय ज्ञान भी अपेक्षित नहीं है क्योंकि विद्वान व्यक्ति भी दुष्कर्मी तथा नास्तिक देखे गए हैं।

ईश्वरीय अनुभूति के लिए आवश्यक हैं-समर्पण, पूर्ण समर्पण, उसी तरह का समर्पण जैसा कि बच्चा मां के प्रति पूर्ण आश्रित तथा समर्पित रहता है तथा मां भी अपने बच्चे के लिए वैसी ही रहती है। इसे ही शास्त्रों में ईश्वर प्रणिधान कहा गया है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....✍

लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति का पर्व

पर्व भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। पर्वों के बिना जीवन नीरस और फीका बन जाता है। पर्वों से व्यक्ति का जीवन उत्साहमय बन जाता है। भारतीय संस्कृति में समय-समय पर पर्वों का आयोजन किया जाता है। ये पर्व हमें ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार मनाए जाने वाले पर्वों द्वारा कोई न कोई दिव्य संदेश मिलता है। पर्व हमें पूर्ण करते हैं, आनन्दित करते है और उत्साह एवं उमंग के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। लोहड़ी एवं मकर संक्रान्ति के त्यौंहार भी भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। सम्पूर्ण उत्तर भारत में इन त्यौहारों को अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति से एक दिन पहले लोहड़ी का त्यौहार पंजाब प्रान्त में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस पर्व पूरे लोगों में बहुत आनन्द और उत्साह होता है। मकर संक्रान्ति का पर्व ऐतिहासिक पर्व है। सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण में गमन का प्रतीक है। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहा है। छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम अयन है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को उत्तरायण और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को दक्षिणायन कहा जाता है। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दिखाई देता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें दिन घटता जाता है और रात्रि बढ़ती जाती है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्त्वशाली माना जाता है। अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावास, जंगल, वन, पर्वत सर्वत्र शीत का आतंक दिखाई देता है। चराचर जगत शीतराज का लोहा मान रहा है। हाथ पैर जाड़े से सिकुड़ जाते हैं- रात्रौ जानू दिवा भानुः रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य किसी कवि की यह उक्ति इस अवसर पर पूर्णरूप से चरितार्थ होती है। दिन की अब तक यह अवस्था होती है कि सूर्य देव उदय होते ही अस्ताचल की ओर जाने की तैयारियां शुरू कर देते हैं। मानो दिन रात्रि में ही लीन होता जाता है। रात्रि सुरसा राक्षसी के समान अपनी देह बढ़ाती ही चली जाती है। अन्त को उसका भी अन्त आया। आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया। आज सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थपर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। वैदिक ग्रन्थों में उसको देवयान कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग तक की अभिलाषा इसी उत्तरायण में रखते हैं। उनके विचारानुसार इस समय देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाशमार्ग से प्रयाण करेगी। आजीवन ब्रह्मचारी भीष्म पितामह ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए प्राणोत्सर्ग की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय कोई पर्व बनने से कैसे वंचित रह सकता था।

मकर संक्रान्ति का यह पर्व बहुत चिरकाल से मनाया जाता है। यह भारत के सभी प्रान्तों में प्रचलित है। सभी प्रान्तों में इसके मनाए जाने की परिपाटी भी समान पाई जाती है। वैद्यक शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तेल, तूल(रूई) बतलाए गए हैं। जिस में तिल सबसे प्रमुख हैं। मकर संक्रान्ति के दिन भारत के सभी प्रान्तों में तिल और गुड़ या खांड के लड्डू बना कर जिनको तिलवे कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्ट मित्रों में बाँटे जाते हैं। मकर संक्रान्ति के पर्व पर दीनों को शीत निवारणार्थ कम्बल और घृतदान करने की प्रथा भी दिखाई देती है। घृत को भी वैद्यक में ओज और तेज बढ़ाने वाला तथा अग्निदीपक कहा गया है। आर्य पर्वों पर दान, जो धर्म का एक सकन्ध है, अवश्यमेव ही कर्त्तव्य है-

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।

- गीता१७।२०

अर्थात् देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान सात्त्विक दान कहलाता है। तथा-

दरिद्रान् भर कौन्तेय मा प्रयच्छेश्वरे धनम्।

अर्थात् हे अर्जुन! दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो। गीता के इन वचनों के अनुसार इस प्रबल शीतकाल में मकर संक्रान्ति के पहले दिन लोहड़ी मनाने का त्योहार प्रचलित है। लोहड़ी का पर्व नवशिशु और नव दम्पत्ति के स्वागत के लिए मनाया जाता है। उस वर्ष के नव शिशु और नव दम्पत्ति का बड़े हर्ष और स्वागत के साथ इष्टमित्रों तथा बन्धु-बान्धवों के द्वारा किया जाता है। पर्व हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक होते हैं। आर्यों के पर्वों पर यज्ञ, अध्ययन और दान का विशेष रूप से सम्पादन किया जाता है, जो आर्य जनता के हृदय को आनन्द से पूरित कर देता है। यही आर्यों के पर्वों की पर्वता है। पर्व पर दिन-प्रतिदिन के व्यवसायों की दौड़ धूप से अवकाश पाकर आर्य गृहों में विशेषता से आनन्दपूर्वक यज्ञ, अध्ययन और दान का अनुष्ठान किया जाता है। समस्त संसार के विद्वान् इस बात को स्वीकार करते हैं कि किसी जाति के पर्व उस जाति के जीवन हैं, अथवा दूसरे शब्दों में किसी जाति का अस्तित्व, उन्नति और अवनति उस के पर्वों के प्रकार से ही प्रकट होती है। जो जाति अपने पर्वों को उनके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान रखकर समुचित श्रद्धापूर्ण प्रेम और असीम उत्साह से मनाती है। उसी जाति को वस्तुतः उन्नत और उत्कृष्ट कहा जा सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि पर्वों के शुद्ध स्वरूप को समझा जाए। हम भी अपने पर्वों को पूर्ण श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाएं। पर्वों के द्वारा जो संदेश हमें मिलता है उसे अपने जीवन में धारण करके अपने जीवन को भी उन्नत और श्रेष्ठ बनाएं।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

हवन यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज धूरी में 2016 नूतन वर्ष के उपलक्ष्य में आर्य समाज की प्रधान प्रहलाद आर्य की अध्यक्षता में यज्ञ, सत्संग करवाया गया। सबसे पहले पंडित शैलेश शास्त्री जी ने वैदिक रीति से यज्ञ करवाया। उसके बाद कानपुर उत्तर प्रदेश से आए हुए जयकरण शास्त्री एवं मलेरकोटला के दयानिधि शास्त्री के द्वारा भजन एवं प्रवचनों का सभी ने आनन्द उठाया। मुख्य यजमान कर्मचन्द गोयल तथा आर्य समाज के सभी सदस्यगणों ने यज्ञ में आहुतियां डाली। इसके बाद प्रधान जी ने आए हुए अतिथियों का स्वागत सम्मान किया। नए साल में यज्ञ सत्संग में उपस्थित आर्य समाज के सभी सदस्य कार्यकारिणी प्रधान महाशय विरेन्द्र गर्ग, डा० रामपाल आर्य, वकील श्री विजय आर्य, सोम प्रकाश आर्य, राजीव मोहिल, वासुदेव आर्य, पवन गर्ग, सतीश आर्य, रमेश आर्य, धर्मदेव, अशोक जिन्दल, विवेक जिन्दल (कोषाध्यक्ष), डा० सरीन जी, ओ० पी० शर्मा जी एवं सभी आर्य समाज के अधिकारीगण उपस्थित रहे। उसके बाद आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य के घर पर भी नए साल के उपलक्ष्य पर हवन करवाए तथा शरद कालीन छुट्टियों के बाद स्कूल लगने पर आर्य समाज में चल रहे तीनों शिक्षण संस्थाओं में भी यज्ञ किया गया। यश चौधरी मॉडल स्कूल, आर्य सीनियर सैकंडरी स्कूल एवं आर्य कालेज में सभी नए साल नूतन वर्ष यज्ञ हवन सत्संग के साथ मनाया गया। **-पुरोहित शैलेश कुमार शास्त्री, आर्य समाज धूरी**

गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में माघ मास का गायत्री महायज्ञ 14 जनवरी 2016 दिन वीरवार मकर संक्रान्ति से 13 फरवरी 2016 दिन शनिवार तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। जिसमें पवित्र गायत्री महामन्त्र द्वारा विश्व शान्ति के लिए यज्ञ में आहुतियां प्रदान की जाएगी। कार्यक्रम का समय 14 जनवरी को प्रातः 7:00 से 8:30 बजे तक तथा 15 जनवरी से 13 फरवरी शनिवार तक दोपहर 3:00 से 5:00 बजे तक होगा। सभी यज्ञप्रेमी महानुभावों से प्रार्थना है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर यज्ञ को सफल बनाएं। **-रवि वासुदेवा मन्त्री आर्य समाज**

केवल एक ही पति

-ले० इन्द्रजित देव चूना भट्टियां, यमुनानगर

(गतांक से आगे)

इस विवरण से तीन बातें सिद्ध होती हैं-1. माता सहित सभी पाण्डव पांचाल देश में इसलिए आए थे ताकि द्रौपदी स्वयंवर में सम्मिलित हो सकें तथा उनकी इच्छा थी कि द्रौपदी को प्राप्त कर सकें।

2. जिस दिन स्वयंवर में पाण्डव गए थे, उस दिन कुन्ती को पता था कि मेरे पुत्र आज स्वयंवर में गए हुए हैं तथा बहुत देर तक पाण्डव लौटे न थे तो वह इस प्रकार की चिन्ता कर रही थी कि मेरे पुत्रों को धृतराष्ट्र के पुत्रों ने मार न दिया हो।

3. स्वयंवर स्थल से युधिष्ठिर, नकुल तथा सहदेव माता के पास आए थे तो निश्चित है कि उन्होंने अर्जुन व भीम के लौटने से पूर्व ही अवश्यमेव यह सूचना ही दी होगी कि हमारे भाई अर्जुन ने स्वयंवर जीत लिया है। यदि उन्होंने माता को सूचना न भी दी हो तो यह तो मानना ही पड़ेगा कि उनके न बताने पर माता ने अवश्य पूछा होगा कि वे दोनों क्यों नहीं आए तथा स्वयंवर किसने जीता है ? स्पष्ट है कि कुन्ती को अर्जुन व भीम के लौटने से पूर्व सारी सच्चाई का बोध हो गया था।

इस विवरण को जानने के बाद भी यदि कोई कहता है कि मां को जब यह कहा गया था कि हम कितनी सुन्दर भीख लाए हैं, तो मां ने कहा था-''सब बांट कर खा लो'' तो ऐसे व्यक्ति की बुद्धि पर हमें तरस आता है। आगे की घटना को जानने से ''मिलकर बांटकर खा लेने'' का आदेश देने की बात तो और भी झूठी, अवास्तविक एवं असम्भव सिद्ध होती है-

अर्जुन द्वारा स्वयंवर जीतने के पश्चात् अनेक ब्राह्मण एकत्रित हो गए। अर्जुन की जय-जयकार हो रही है। भीड़ भारी थी और एक पग आगे बढ़ाना भी कठिन हो रहा था। द्रौपदी उस योद्धा के संग चली जा रही है। साथ में भीम है, ब्राह्मण हैं व नगर वासियों का प्रसन्न समूह है-

ब्राह्मणैस्तु प्रतिच्छन्नौ शैरवाजिनवासिर्मिः।
कृच्छेण जग्मतुस्तौ तु भीमसेनधनञ्जयौ।।

-आदि पर्व, 189वां अध्याय, 41वां श्लोक

इत्येवं चिन्तयामास सुतस्नेहावृता पृथा।
ब्राह्मणैः प्रविशतः तत्र जिष्णुर्भार्गववेशम्।।

सामान्य व्यक्ति भी यह बात स्वीकार करने को तैयार न होगा कि भीड़ व भारी जन समूह के बीच में अर्जुन अथवा भीम ने यह कहा होगा ? ''मां देखो! हम कितनी सुन्दर भिक्षा लाए हैं।'' इसके विपरीत मां ने बहू का यथाशक्य स्वागत किया होगा व दो छोटे भाईयों नकुल व सहदेव ने अपनी भाभी को प्रणाम किया होगा। यहां हम एक बहुत महत्त्वपूर्ण प्रश्न अपने पाठकों के आगे सामान्य रूप में रखते हैं तथा श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर के समक्ष विशेष रूप में प्रस्तुत करते हैं। वह प्रश्न यह है कि यदि माता अथवा पिता कोई गलत इच्छा या आदेश प्रस्तुत करते हैं तो क्या सन्तान को उसका पालन करना चाहिए ? हमारा उत्तर है कि सन्तान को ऐसे आदेश या निर्णय को नहीं मानना चाहिए। हमारी बात का विरोध करने वालों से निवेदन है कि यदि मैं अपने पुत्र को कुछ रुपए देकर कहूं कि सामने शराब की दुकान है। तुम ये रुपए ले जाओ तथा एक बोतल शराब लेकर आओ। मेरा पुत्र यदि मेरी इच्छा पूर्ण करता है तो यह अवैदिक है, लज्जात्मक है, मेरे व पुत्र के लिए ही नहीं, पूरे परिवार एवं समाज के लिए भी हानिकारक है। इस सम्बन्ध में हम रामायण का एक प्रसंग प्रस्तुत करते हैं। यह प्रसंग तब का है, जब राम, सीता व लक्ष्मण वन जाने लगे तो पिता दशरथ के दर्शन करने हेतु उनके पास गए। तब पिता ने कहा-

अहं राघव! कैकेय्या वरदानेन मोहितः।
अयोध्यायास्त्वमेवाद्य भवराजा निगृह्य माम्।।

-रामायण अयोकांड

अर्थ-''हे राम! कैकेयी ने वरदान के द्वारा मुझे धोखा दिया है। अतः तुम मुझे बन्दी बनाकर बलपूर्वक अयोध्या के राजा बनो।'' (कैकेयी को छोड़कर) सारी प्रजा व विद्वत्जन सब तुम्हें पसन्द करते हैं।

अपगच्छतु ते दुःखं मा भूर्वाष्प-परिप्लुतः।
नहि क्षुभ्यति दुर्धर्षः समुद्र सरिता पतिः।।

-रामायण, अयोध्या कांड

अर्थ-राम ने पिता को कहा, दुख दूर हो जाए, आप इस प्रकार अश्रु न बहाएं, सरिताओं के स्वामी दुर्धर्ष समुन्द्र क्षुब्ध नहीं होता अर्थात् अपनी मर्यादा का परित्याग नहीं करता। इसी प्रकार आपको भी क्षुब्ध नहीं होना चाहिए।

त्वामहं सत्य भिच्छामि नानृत पुरुषर्षम्, प्रत्यक्ष तव सत्येन सुक्रतेन चते रापे।

-रामायण अयोध्या काण्ड

अर्थ-''पुरुषशिरोमणे! मेरे मन में यदि कोई इच्छा है तो यही है कि आप सत्यवादी बनें। आपका वचन मिथ्या न होने पाए। यह बात मैं आपके सामने सत्य और शुभ कर्मों की शपथ खाकर कहता हूं'' मैं आपको मिथ्यावादी नहीं बनाना चाहता।

राम ने पिता का कहना नहीं माना तो क्या इतिहास में राम कुपुत्र कहलाए ? इसी प्रकार कैकेयी ने भरत के लिए राज लिया परन्तु भरत ने मां का कहना नहीं माना। सभी भरत की प्रशंसा करते हैं। दयानन्द का पिता पुत्र का विवाह करके गृहस्थ में बसाना चाहते थे। दयानन्द ने पिता का आदेश नहीं माना। गुरु नानक के पिता पुत्र को व्यापारी बनाना चाहते थे व इसके लिए कुछ रुपए भी दिए परन्तु गुरु नानक ने पिता की बात नहीं मानी और भी ऐसे उदाहरण हैं, जब माता या पिता का आदेश न मानने वाले पुत्र महान् बने। तैत्तिरीयोपनिषद् की शिक्षाध्याय वल्ली, अनुवाक 11, कं० 1, 2, 3 व 4 में कहा गया है-'यानि अनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि' अर्थात् जो देव हैं, पितर हैं, माता हैं, पिता हैं, आचार्य हैं, अतिथि हैं, इन सबको बड़ा मानकर तुम्हें इनके कहे अनुसार चलने को कहा जा रहा है परन्तु इनकी सही बात को मानना तथा जो बात इनकी न जंचने वाली हो, उसे मानने से इन्कार कर देना चाहिए।

इस आधार पर हमारा निवेदन यह है कि यदि कुन्ती ने मिल बांटकर खाने को कहा ही था तो भी पुत्रों को चाहिए था कि वे इसे स्वीकार न करते। वैसे पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि कुन्ती द्वारा ऐसा कहा जाना प्रमाणित नहीं है।

महाभारत में यह भी उल्लेख है कि अर्जुन व भीम के साथ द्रौपदी भी कुन्ती के पास गई थी और द्रौपदी के भाई धृष्टद्युम्न ने गुप्त रूप में उनका पीछा किया व उनके शील का परीक्षण किया था। उसने लौटकर अपने पिता को पूरी रपट दी। पिता का बिना विवाह अपनी पुत्री को ससुराल में भेज देना अवैदिक, असामाजिक व अपरम्परागत कार्य है। हम इसे प्रक्षिप्त कोटि में गिनते हैं। धौम्य मुनि, कृष्णा, व्यास तथा बलराम जैसे मर्यादा व्यक्तियों के होते हुए यह शास्त्र विरुद्ध कार्य हुआ था, यह मानने योग्य बात नहीं है।

स्वयंवर के अवसर पर पाण्डव भूखे ही रहे थे, यह कोई भी बुद्धि जीवी नहीं मान सकता। राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री का स्वयंवर रचाया था तो क्या पधारे हुए राजाओं, ब्राह्माणों व प्रजा जनों के लिए भोजन की व्यवस्था न की होगी ? कम से कम अपने जमाता अर्जुन, भीम व उनके भाईयों व अपनी समधिन के लिए भोजन का प्रबन्ध तो किया ही होगा। फिर हम भीख मांगकर लाए हैं और प्रत्युत्तर में यह कहना कि मिल बांटकर खा लो, ऐसा कहना-सुनना व मानना एक प्रतिशत भी विश्वसनीय नहीं है।

द्रौपदी का विवाह किससे हुआ, अब इस विषय पर विचार करते हैं। राजा द्रुपद ने जब यह कहा कि महाबाहु अर्जुन मेरी पुत्री से विधिवत् प्राणिग्रहण करें तो युधिष्ठिर ने कहा-''ममापि दार-सम्बन्धः कार्यस्तावद् विशाम्यते।'' अर्थात् राजन! विवाह तो मेरा भी करना होगा।''यदि ऐसा है तो आप ही मेरी पुत्री का पाणिग्रहण करें अथवा आप अपने भाईयों में से जिसके साथ द्रौपदी को विवाह की आज्ञा दें, उससे ही विवाह हो जाए।''

''द्रौपदी तो हम सब भाईयों की पटरानी होगी। मेरी मां ने पहले ही ऐसी आज्ञा दे रखी है। मैं और भीमसेन दोनों अविवाहित हैं। आपकी पुत्री को अर्जुन ने जीता है, यह सत्य है पर हमं सब इस रत्न का रहभोग करेंगे।''

(क्रमशः)

महर्षि दयानन्द का आदर्श एवं प्रेरक जीवन

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

महर्षि दयानन्द वैदिक विचारधारा के ऋषि, विद्वान, आप्तपुरुष, सन्त, महात्मा सहित देश व समाज के हितैषी अपूर्व महापुरुष थे। उनका जीवन सारी मनुष्य जाति के लिए आदर्श, प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है। आज के लेख में हम उनके जीवन की कुछ महत्त्वपूर्ण प्रेरणादायक घटनाओं को प्रस्तुत कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि इनके अध्ययन व अनुकरण से सभी को लाभ होगा। पहली घटना हम बरेली में उनके व्याख्यान की ले रहे हैं जिसका वर्णन स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' में किया है। बरेली में एक दिन स्वामी जी व्याख्यान दे रहे थे। व्याख्यान में नगर के गणमान्य पुरुष और बड़े-बड़े राज-अधिकारी, कमिश्नर आदि सभी उपस्थित थे। व्याख्यान में इसाई मत की मिथ्या मान्यताओं का खूब खण्डन किया गया। दूसरे दिन व्याख्यान से पूर्व उनसे कहा गया कि आप इतना खण्डन न करें, इससे उच्च अंग्रेज अधिकारी अप्रसन्न होंगे। दूसरे दिन का व्याख्यान प्रारम्भ हुआ। व्याख्यान में कमिश्नर आदि सभी उच्च राज्याधिकारी उपस्थित थे। स्वामी जी ने गरज कर कहा-''लोग कहते हैं कि असत्य का खण्डन न कीजिए, पर चाहे चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों न हो जाए, परिणाम कुछ भी हो, हम तो सत्य ही कहेंगे। अभय से पूर्ण मनुष्य से ऐसे जीवन को ही कहते हैं ईश्वर की सत्ता और सत्य पर अटल विश्वास। दूसरी घटना कर्णवास में महर्षि दयानन्द के प्रवास की ले रहे हैं। जब स्वामी जी यहां आए थे तो अनूप शहर का एक अच्छा संस्कृतज्ञ विद्वान् पंडित हीरावल्लभ अपने कुछ साथियों के साथ शास्त्रार्थ के लिए स्वामी जी के पास आया। सभा संगठित हुई। पंडित हीरावल्लभ ने बीच में ठाकुर जी का सिंहासन, जिस पर शालिग्रामादि की मूर्तियां थी, रखकर सभा में प्रतिज्ञा की कि मैं स्वामी जी से इन्हें भोग लगवाकर ही उठूंगा। छह दिन तक बराबर धाराप्रवाह संस्कृत में शास्त्रार्थ होता रहा। सातवें दिन पण्डित हीरावल्लभ ने सभा में प्रकट कर दिया कि जो कुछ स्वामीजी कहते हैं वही ठीक है और सिंहासन पर वेद की स्थापना की। महर्षि दयानन्द ने सभी उपलब्ध शास्त्रार्थ और प्रवचन पंडित युधिष्ठिर मीमांसक जी के ग्रन्थ 'महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन' में उपलब्ध हैं। पाठक इस ग्रन्थ का अध्ययन कर इस ज्ञानवर्धक सामग्री से लाभान्वित हो सकते हैं।

कर्णवास की ही एक अन्य घटना इस प्रकार है कि एक दिन स्वामी जी गंगा तट पर उपदेश कर रहे थे। बरौली के राव कर्ण सिंह अपने कुछ हथियारबन्द साथियों सहित वहां आए और बातचीत करते-करते बड़े क्रोध में आकर उन्होंने तलवार खींच कर स्वामी जी पर आक्रमण किया। स्वामी जी ने तलवार छीनकर दो टुकड़े कर दिए और राव को पकड़कर कहा कि मैं तुम्हारे साथ इस समय वही सलूक कर सकता हूं जो किसी ''आततायी (आतंकवादी) के साथ किया जा सकता है। परन्तु मैं सन्यासी हूं। इसलिए छोड़ता हूं। जाओ ईश्वर तुम्हें सुमति देवे। स्वामी दयानन्द जी का जीवन महान था। उनकी महानता का एक उदाहरण तब सामने आया जब उन्होंने अपनी हत्या का प्रयास करने वाले को न केवल क्षमा कर दिया अपितु वैधानिक दण्ड से भी बचाया। यह घटना अनूप शहर की है। वहां स्वामी जी के सच्चे और स्पष्ट उपदेश से अप्रसन्न होकर एक दुष्ट पुरुष ने स्वामी जी के पास आकर नम्रता प्रदर्शित करते हुए एक पान का बीड़ा इनको भेंट किया। स्वामी जी ने लेकर उसे मुंह में रख लिया। मुंह में रखते ही उन्हें मालूम हो गया कि इसमे विष मिला हुआ है। योग सम्बन्धी बस्ती और न्यौली क्रियाओं को करके उन्होंने उसके प्रभाव को नष्ट कर दिया। जब यह हाल वहां के मैजिस्ट्रेट सैयद मुहम्मद को मालूम हुआ तो उसने उस दुष्ट व्यक्ति को पकड़कर हवालात में डाल दिया और स्वामी जी के पास आकर अपनी कारगुजारी प्रकट करने आया तो स्वामी जी ने अपनी अप्रसन्नता प्रकट करके उसे छुड़वा दिया और कहा कि ''मैं दुनिया को कैद कराने नहीं अपितु कैद से छुड़ाने आया हूं।'' स्वामी जी जब उदयपुर में थे तब वहां एक दिन उदयपुर के महाराज महाराणा सज्जनसिंह जी को मनुस्मृति का पाठ पढ़ाते हुए कहा कि-''यदि कोई अधिकारी धर्मपूर्वक आज्ञा दे तभी उसका पालन करना चाहिए। अधर्म की बात न माननी चाहिए। इस पर सरदारगढ़ के ठाकुर मोहन सिंह जी ने कहा कि महाराणा हमारे राजा हैं, यदि इनकी कोई बात हम अधर्मयुक्त बतलाकर न मानें तो ये हमारा राज छीन लेंगे। इस पर स्वामी जी ने कहा कि-''धर्महीन हो जाने से और अधर्म के काम करके अन्न खाने से तो भीख मांगकर पेट का पालन करना अच्छा है।'' इस घटना में स्वामी जी ने उदयपुर के महाराजा के भय से सर्वथा शून्य होकर धर्म को सर्वोपरि महत्त्व दिया। इससे यह भी शिक्षा मिलती है कि किसी भी मनुष्य को अपने आश्रयदाताओं व उच्चतम अधिकारियों की धर्म विरुद्ध आज्ञाओं को न मानना चाहिए भले ही इससे उनकी कितनी भी हानि क्यों न हो।

उदयपुर की ही एक अन्य घटना है। वहां एक दिन एकान्त में स्वामी जी महाराजा से सज्जनसिंह जी ने कहा कि महाराज! आप मूर्ति पूजा का खण्डन करना छोड़ दें। यदि आप इसे स्वीकार कर लें कि एक लिंग महादेव के मन्दिर, जिसके साथ लाखों रुपए की जायदाद लगी हुई है, आपकी होगी और आप सारे राज्य के गुरु माने जाएंगे। स्वामी जी ने उत्तर दिया-''आपके सारे राज्य से मैं एक दौड़ लगाकर कुछ समय में बाहर जा सकता हूं परन्तु ईश्वर के संसार से दूर नहीं जा सकता, फिर मैं किस प्रकार इस धर्म विरुद्ध तुच्छ प्रलोभन में आकर ईश्वर की आज्ञा भंग करूं।'' यह है ईश्वर, उसकी व्यवस्था व धर्म में पूर्ण विश्वास और स्वार्थ से रहित सच्चे त्याग का उदाहरण। प्रयाग की एक घटना है। एक दिन स्वामी जी एक सभा में उपस्थित थे। पंडित सुन्दर लाल जी आदि कुछ सभ्य पुरुष भी उपस्थित थे। स्वामी जी यकायक हंस पड़े। कारण पूछने पर बतलाया कि एक पुरुष मेरे पास आ रहा है, उसके आने पर एक कौतुक दिखाई देगा। थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति स्वामी जी के लिए कुछ विष मिश्रित मिठाई लाकर कहने लगा कि महाराज इसमें से कुछ भोग लगाएं। स्वामी जी ने थोड़ी सी मिठाई उठाकर लाने वाले को दी, उसे कहा कि इसे तुम खाओ, परन्तु उसने मिठाई लेने और खाने से इन्कार कर दिया। स्वामी जी इस पर हंस पड़े और पंडित सुन्दर लाल आदि पुरुषों से कहा कि देखो यह अपने पाप के कारण स्वयं कांप रहा है और लज्जित है। इसे पर्याप्त दंड मिल गया है अब और दण्ड की आवश्यकता नहीं। यह थी स्वामी दयानन्द जी की योग व ईश्वरोपासना की शक्ति और दयालुता।

स्वामी जी की मृत्यु जोधपुर में उन्हें विष दिए जाने के कारण हुई थी। स्वामी जी जोधपुर के महाराजा जसवन्त सिंह के छोटे भाई कुंवर प्रताप सिंह व महाराजा के निमन्त्रण पर पधारे थे। उन्होंने अपने प्रवचनों में राजाओं के दुव्यसनों मुख्यत: राजाओं की वेश्याओं की आस्ति व वैश्याचारिता का तीव्र खण्डन किया था। अपनी शिक्षाओं में उन्होंने वैश्याओं की उपमा कुतिया से और राजाओं की उपमा शेर से की थी। मत-मतान्तरों की मिथ्या बातों का खण्डन तो वह करते ही थे। अत: एक षडयन्त्र के अन्तर्गत उनके विरोधियों ने उनके पाचक को अपने वश में करके उसके द्वारा स्वामी जी को सितम्बर 1883 के अन्तिम सप्ताह की एक रात्रि को दूध में जहर डालकर पिलवा दिया था। स्वामी जी को इसका पता देर से रात्रि तब चला जब उन्हें उदरशूल, दस्त होने के साथ वमन आदि की शिकायत हुई। (शेष पृष्ठ 6 पर)

13वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

रोजड़ वानप्रस्थ साधक आश्रम गुजरात में हुआ आयोजन समान गुणकर्म स्वभाव वालों के बीच विवाह आर्य विचारधारा है। कोटा, 5 जनवरी। समान गुणकर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों के बीच विवाह संबंध ही आर्य समाज की विचारधारा है। संस्कारित परिवार एवं समाज के निर्माण में इस विचार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उक्त विचार 13वें आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुरेचंद्र अग्रवाल ने व्यक्त किए।

रोजड़ वानप्रस्थ साधक आश्रम गुजरात में आयोजित इस सम्मेलन में बोलते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि आर्य परिवारों को मिलाना तथा उन्हें विवाह संबंध के लिए अवसर उपलब्ध कराना ही हमारा मूल उद्देश्य है।

कार्यक्रम का आरम्भ ईश स्तुति प्रार्थना मंत्रों के साथ हुआ। उपस्थित अतिथियों के दीप प्रज्वलन कर सम्मेलन का प्रारम्भ किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल प्रधान गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा हसमुख भाई परमार महामन्त्री, श्री रणजीत सिंह परमार उपप्रधान, श्रीधन जी भाई आर्य उपमंत्री तथा श्रीकांति भाई काकाणी सदस्य गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा सहित राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चड्ढा का बैज लगाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए महामंत्री हसमुख भाई परमार ने कहा कि आर्य परिवार परिचय सम्मेलन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। गुजरात सभा इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाएगी।

इस अवसर पर रणजीत सिंह जी परमार ने कहा कि इस कार्य को सफलतम बनाने के लिए सभी आर्यजन अपने-अपने परिवार के बच्चों को इस परिचय सम्मेलन से जोड़ें। सम्मेलन में उपमंत्री धनजी भाई ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह हमारा पहला प्रयास। इस आयोजन के माध्यम से परिचय सम्मेलनों का संदेश गुजरात में दूर-दूर तक पहुंचेगा और आर्य पुत्र-पुत्रियां के रिश्ते निर्धारण की समस्या का समाधान होगा।

उद्घाटन कार्यक्रम के पश्चात् राष्ट्रीय संयोजक अर्जुन देव चड्ढा के निर्देशन में सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। उपस्थित युवक एवं युवतियों ने मंच पर आकर आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय दिया।

सम्मेलन में उपस्थित युवक एवं युवतियों को अलग-अलग रंग के बैज लगाकर उसके पृथक-पृथक बैठक की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर विस्तृत जानकारी देते हुए विवरणिका का प्रकाशन किया गया। जो उपस्थित युवक-युवतियां एवं अभिभावकों को निशुल्क दी गई।

सम्मेलन में पूर्व पंजीकृत के अलावा तत्काल पंजीयन की व्यवस्था भी की गई। इस अवसर पर तत्काल पंजीयन, विवरणिका वितरण, बैज वितरण आदि के विभिन्न स्टाल लगाए गए थे।

उक्त सभी कार्यों में कोटा राजस्थान से पधारे श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने अमूल्य योगदान दिया। परिचय सम्मेलन में उपस्थित सभी आगन्तुकों के लिए आवास तथा चाय नाश्ता एवं भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था की गई थी।

इस अवसर पर एक अभिभावक श्रीमती अग्रवाल ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि कोटा के लोगों की यह अच्छी पहल है कोटा से हमें विशेष लगाव है मेरे पुत्र और पुत्री दोनों में कोटा में रहकर कोचिंग की और आई.आई.आई टीयन बन सफलता प्राप्त की। वह आर्य समाज का वातावरण भी दिया है।

कार्यक्रम के अन्त में गुजरात के संयोजक श्री हंसमुख भाई परमार द्वारा सभी का धन्यवाद अर्पित किया गया।

शोक संवेदना

आर्य समाज नवांशहर के वरिष्ठ सदस्य श्री इन्द्रदेव गौतम जी का दिनांक गत दिनों नई दिल्ली में 85 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनकी अन्तिम शोक सभा नवांशहर में दिनांक 11 जनवरी 2016 को हुई जिसमें शहर के गणमान्य लोगों द्वारा तथा आर्य समाज की सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं की तरफ से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री इन्द्रदेव गौतम जी की धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुमति गौतम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की सदस्या भी रही हैं। श्री इन्द्रदेव जी गौतम आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे और इसके साथ साथ वह नवांशहर में स्थित आर्य शिक्षण संस्थाओं के भी माननीय सदस्य रहे। उनका इन शिक्षण संस्थाओं की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान हैं। उनके चले जाने की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति करना असंभव है। मैं अपनी ओर से और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से व पंजाब में आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

पृष्ठ 2 का शेष-महर्षि ईश्वर और.....

इसकी व्याख्या में योगदर्शन के भाष्यकार व्यास जी कहते हैं कि उस परम गुरु परमात्मा में अपने सभी कार्यों का समर्पण करना ईश्वर प्रणिधान कहलाता है। यह कार्य एक सच्चा भक्त ही कर सकता है। इसके लिए ईश्वर पर पूर्ण निष्ठा एवं विश्वास होना आवश्यक है। यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान देने की है कि ऐसे ईश्वर प्रणिधान की रक्षा, व्यवस्था स्वयं परमेश्वर करता है।

ऐसा व्यक्ति पूर्णत: निश्चिंत होता है। सभी प्रकार के सुख-दु:ख को स्वभाव से सहन करता है और आडम्बर शून्य सरल जीवन जीता है। संसार के सभी कार्य करते हुए भी वह उनमें निर्लिप्त रहता है, क्योंकि वह सभी कार्य ईश्वरेच्छा मान कर ही करता है। वह तो बस यही कहता है-''अब सौंप दिया। इस जीवन का सब भार बोलने को तो अन्य व्यक्ति भी इस भजन को गाते हैं, किन्तु ईश्वर प्रणिधानी व्यक्ति इसे सुख में गाता मात्र नहीं है, अपितु वह तो जीवन में भी धारण कर रहा होता है। भगवान् कृष्ण ने गीता में अर्जुन को यही तो समझाया है-''सर्व धर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।'' अर्जुन! तू अपने मन में धारण किए गए सभी विकल्पों को छोड़कर केवल मेरी शरण में आ जा। ऐसा करने से क्या होगा ? स्वयं कृष्ण उत्तर देते हैं-''अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षिष्ये नात्र सशंय:।'' मैं तुम्हें सभी प्रकार के पाप से बचा लूंगा, इसमें सन्देह नहीं है।

बस ईश्वर प्रणिधानी को भी यही करना पड़ेगा तब उसके जीवन का सम्पूर्ण भार परमेश्वर पर होगा। उसकी जीवन यात्रा परमेश्वर ही चलाएगा तथा जीवन के अन्त में ऐसा व्यक्ति यही कहेगा, ''हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो।'' बस,मुझे तो ईश्वर का यही स्वरूप तथा यही सम्बन्ध अच्छा लगता है। मेरा ईश्वर मेरे हृदय में बसा रहे, यहां से कभी दूर न हो। ईश्वर पाणिधान का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति पुरुषार्थ छोड़कर प्रमादी बन जाए। इसके लिए तो सर्वस्व त्याग करना पड़ता है, आत्माहुति देनी पड़ती है।

पृष्ठ 5 का शेष-महर्षि दयानन्द.....

स्वामी जी को सारी स्थिति का पता चल जाने पर उन्होंने अपने पाचक को पास बुलाकर उसे कुछ रुपए देते हुए कहा कि इन्हें लेकर नेपाल के राज्य आदि किसी ऐसे स्थान पर चले आओ जहां तुझे पकड़ा न जा सके और तुझे अपने प्राण न खोने पड़ें। अपने प्राणहंता की इस प्रकार रक्षा कर उन्होंने इतिहास में एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसा उदाहरण विश्व इतिहास में दुर्लभ है। स्वामी जी ने पूना में अपने जीवन की घटनाओं विषयक एक उपदेश दिया था। उन्होंने थियोसो-फिकल सोसायटी के निवेदन पर अपनी संक्षिप्त आत्मकथा भी लिखी थी। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके अनेक खोजपुर जीवन चरित्र प्रकाश में आए जिनमें पंडित लेखराम, पंडित गोपालराव हरि, पंडित देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय, स्वामी सत्यानन्द, मास्टर लक्ष्मण आर्य, श्री हरविलास शारदा, श्री रामविलास शारदा आदि प्रमुख हैं। यह सभी जीवन चरित रामायण एवं महाभारत की ही भांति आदर्श प्रेरणादायक तथा पाठक में धर्म के प्रति अनुराग व बोध उत्पन्न करने में समर्थ हैं। इन्हें पढ़कर एक दस्यु वृत्ति का मनुष्य भी साधु बन सकता है और सच्चा मानव जीवन व्यतीत कर सकता है। पाठकों को इन जीवन चरित्रों से लाभ उठाना चाहिए।

ईश्वर का भजन किया नहीं जीवन गंवा दिया

फगवाड़ा 27 दिसम्बर को आर्य समाज गौशाला रोड़ के तत्वावधान में आर्य मॉडल सी. सै. स्कूल में वेद प्रचार दिवस मनाया गया। स्व. मा. मनोहर लाल चोपड़ा की स्मृति में आयोजित इस उत्सव पर सर्वप्रथम हवन यज्ञ किया गया, जिसमें श्री रणजीत सोंधी, श्रीमती रचना सोंधी, श्रीमती एवं श्री आशु पुरी व रोहित प्रभाकर तथा श्रीमती सरला चोपडा व तनवी चोपड़ा यज्ञमान के रूप में सम्मिलित हुए।

तदोपरान्त मथुरा से पधारे वयोवृद्ध स्वामी डा. पूर्णानन्द सरस्वती जी ने वेदों की शिक्षाओं पर आधारित भजनोपदेश करते हुए उपस्थिति को बहुत अधिक प्रभावित किया। अपने भजनों के माध्यम से स्वामी जी ने उपदेश किया कि वेदों में ईश्वर भक्ति, परोपकार, माता-पिता, अतिथि व बुजुर्गों की सेवा, आदर सत्कार व परमार्थ करते हुए जीवन जीने की बात कही गई है। आर्य समाज के प्रधान डा. कैलाश नाथ भारद्वाज एवं उप प्रधान धर्मवीर नारंग ने स्वामी जी को गर्म लोई से सम्मानित किया। आर्य समाज सी. सै. स्कूल के मैनेजर सुरिन्द्रा चोपड़ा, प्रिंसीपल नीलम पसरीचा, भारतीय जनता पार्टी के प्रधान रमेश सचदेवा व आर्य समाज की कार्यकारिणी सदस्या नीलम चोपड़ा ने स्वामी जी के चरणों में दक्षिणा अर्पित की।

धार्मिक समिति के प्रधान डा. योगेन्द्र पाल शर्मा, आर्य लेखिका प्रो. सरला भारद्वाज, कमला नेहरू संस्थाओं के सचिव, डा. हरिवंश मेहता, आर्य समाज बंगा के प्रधान शादी लाल महेन्द्रु, आर्य समाज बंगा रोड फगवाड़ा के महामंत्री देशबन्धु चोपड़ा, आर्य सभासद बलराज खोसला, प्रिंसीपल मास्टर राजिन्द्र दत्त तथा मास्टर सुशील कोहली ने स्वामी जी को पुष्पमालाएं पहनाकर उनका अभिनन्दन किया।

आर्य समाज के महासचिव डा. यश चोपड़ा ने कहा कि वेद भारतीय संस्कृति के प्राण हैं। उन्होंने कहा कि लोगों को वेदों की शिक्षाओं को जीवन में धारण करते हुए वेदों की तरफ लौटना चाहिए। इस मौके पर पंजाब यंग पीस कौंसिल के प्रधान अश्वनी कुमार दसौड़, भुपिन्द्र सिंह सोनी, रछपाल भट्टी, हिन्दू शिव सेना के राजेश पलटा, सुभाष दुआ, संजीव सभ्रवाल, रेणु चोपड़ा, उर्मिला सूद, शीतल कोहली, राष्ट्रीय स्वयं संघ के प्रमुख शिव हांडा, सतीश बग्गा, प्रिंसीपल के. एल. सोबती, कौंसलर चंदा मिश्रा, जतिन्द्र बरमाली, संजय ग्रोवर, भाजपा नेता सुदेश शर्मा, कीमती शर्मा, रमेश शर्मा व नरिन्द्र वरमानी सहित (सैंकड़ों) लगभग 250 गणमान्य उपस्थित थे।

अन्त में प्रधान डा. कैलाश नाथ भारद्वाज ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए स्व. मास्टर मनोहर लाल चोपड़ा के आर्य समाज के प्रति योगदान एवं उनके सामाजिक कार्यों को स्मरण किया।

कार्यक्रम के उपरान्त उपस्थिति ने आलू नान, आलू छोले, गजरेला व चाय के रूप में ऋषि प्रसाद का भी आनन्द लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित 2016 के कैलेंडर भी वितरित किए गए। आमन्त्रित आर्य लोगों को निमन्त्रण पत्र के साथ आर्य समाज का सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी पढ़ने पढ़ाने के लिए दिया गया।

-डा. यश चोपड़ा महासचिव

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में गायत्री महायज्ञ का आयोजन

स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन जालन्धर में माघ मास में एक महीना लगातार चलने वाले दु:खनिवारक सुखवर्षक गायत्री महायज्ञ का आयोजन दिनांक 14 जनवरी 2016 वीरवार से 14 फरवरी 2016 रविवार तक किया जा रहा है। यह कार्यक्रम दोपहर 2:30 से 4:30 बजे तक चलेगा। इस एक महीने चलने वाले कार्यक्रम में 14 से 20 जनवरी तक आचार्य उदयन जी गुरूकुल करतारपुर के प्रवचन, 21 से 27 जनवरी तक आचार्य शिवदत्त पाण्डे जी उत्तरप्रदेश के प्रवचन, 29 से 4 फरवरी तक आचार्य सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय जालन्धर के प्रवचन तथा 5 फरवरी से 14 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी सुन्दरनगर के प्रवचन होंगे। भजन स्त्री समाज की बहनों के द्वारा गाए जाते हैं। आप सभी से प्रार्थना है कि इस गायत्री महायज्ञ के कार्यक्रम में पधार कर पुण्य अर्जित करें।

नोट:- इस कार्यक्रम में पुरूष भी सादर आमन्त्रित हैं।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज

मकर सक्रान्ति

-ले० श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, उप प्रधान आर्य समाज, फोकल प्वाइंट, लुधियाना

मकर सक्रान्ति भारत वर्ष और नेपाल में रहने वाले सभी हिन्दू किसी न किसी रूप में मनाते हैं। यह त्यौहार प्रतिवर्ष पौष मास की चतुर्थी को शुक्ल पक्ष में पड़ता है। मकर सक्रान्ति एक सौर घटना है जो प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। मकर सक्रान्ति के दिन किसान अपनी अच्छी फसल के लिए परमात्मा को धन्यवाद देकर उसकी अनुकम्पा और आशीर्वाद सब पर बनाए रखने के लिए प्रार्थना करते हैं। यह दिन भारत वर्ष में बसन्त ऋतु के आगमन को भी सूचित करता है। इस दिन सूर्य मकर रेखा को पार कर उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। मकर सक्रान्ति के दिन से कर्क सक्रान्ति तक का समय उत्तरायण व उत्तरी क्रान्ति के नाम से भी जाना जाता है।

भारत के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग प्रकार की भाषाएं और बोलियां होने के कारण इस त्यौहार को मनाने के तरीके भी अलग-अलग हैं। उत्तर भारत में मकर सक्रान्ति, उत्तरायण, खिचड़ी और दक्षिण भारत में पोंगल और पीहू के नाम से भी मनाया जाता है।

पंजाब, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, गोवा, राजस्थान, उत्तराखंड, पश्चिमी बंगाल, कर्नाटक, झारखंड, मनीपुर, सिक्किम आदि प्रदेशों में मकर सक्रान्ति और गुजरात में उत्तरायण के नाम से इस त्यौहार को मनाया जाता है।

पंजाब में मकर सक्रान्ति के त्यौहार के साथ ही मेला माघी के नाम से मुक्तसर में मनाया जाता है। इस दिन 40 मुक्तों को याद किया जाता है जिन्होंने श्री गुरु गोबिन्द जी का साथ मुगलों के साथ लड़ते हुए छोड़ दिया था परन्तु बाद में पश्चाताप करते हुए गुरु गोबिन्द सिंह जी के पक्ष में मुगलों से लड़ते हुए शहीद हो गए थे।

प्रवेश सूचना-सत्र 2016-2017

छठी कक्षा में (आयु +9 से -11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31.03.2016 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।) कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 03 अप्रैल 2016 दिन रविवार को प्रात: 8.00 बजे होगी।

सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

-सत्यानन्द मुंजाल (कुलपति)

आर्य समाज जेल में बंदियों को ऊनी वस्त्र वितरित आध्यात्मिक सत्संग का हुआ आयोजन

आर्य समाज जिला सभा कोटा के तत्वावधान में आर्य समाज द्वारा केन्द्रीय कारागृह कोटा में बंदियों को ऊनी वस्त्र वितरित किए गए। कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए जिला सभा प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने बताया कि संसार का उपकार आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इसी के तहत आर्य समाज द्वारा जेल में बंद पुरुष कैदियों को स्वैटर, जर्सी, इनरवेयर तथा महिला कैदियों को ऊनी टोपे, मौजे आदि बांटे गए। ऊनी वस्त्र वितरण से पूर्व जेल में आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए मुख्य अतिथि श्री प्रेम दास जी प्रेसीडेंट एण्ड बिजनेस हैड डीसीएम श्रीराम कोटा ने कहा कि व्यक्ति को सत्पात्र बनना चाहिए। सत्पात्रता से आचरण अच्छा बनता है जीवन निर्माण होता है, अपने जीवन के सुधार करें।

इस अवसर पर आर्य समाज के वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि विचार से ही मनुष्य श्रेष्ठ बनता है। जीवन में श्रेष्ठ विचारों को अपनाएं, क्रोध को छोड़ें। अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का उद्देश्य लोगों को बंधन से मुक्त करना था। उन्होंने श्रेष्ठ आचरण द्वारा जीवन में बुराईयों से मुक्त, होने का मार्ग बतलाया। कार्यक्रम में आर्य विचारक राम प्रसाद याज्ञिक ने विश्वानिदेव मंत्र की व्याख्या की। उन्होंने ईश्वर से अपनी प्रार्थना में अच्छे कर्म, गुण और स्वभाव की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करने को कहा। इस अवसर पर डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता ने कैदियों से बीड़ी, तम्बाकू, शराब आदि का नशा छोड़ने का आहवान किया। कार्यक्रम के अंत में जेल अधीक्षक सुधीर प्रकाश पूनिया ने आर्य समाज के आगन्तुक विद्वानों का इस कार्यक्रम के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। इस अवसर पर आर्य समाज द्वारा मुख्य अतिथि प्रेमदास तथा जेल अधीक्षक एस. पी. पूनियां को महर्षि दयानन्द लिखित सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन, जेलर नरेन्द्र स्वामी ने किया। इस अवसर पर जे. एस. दुबे प्रधान विज्ञाननगर, ओम प्रकाश, तापड़िया प्रधान तिलक नगर, हरिदत्त शर्मा प्रधान रेलवे कालोनी, एडवोकेट चन्द्रमोहन कुशवाह, राजीव आर्य तथा डीसीएम श्रीराम कोटा के निगम प्रकाश उपस्थित थे।

-अरविन्द पाण्डेय प्रचार एवं कार्यालय सचिव

आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा का 36वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला बस्ती दानिशमन्दा का 36वां वार्षिक उत्सव दिनांक 27-12-2015 से 3-01-2016 तक बड़े उत्साह एवं धूमधाम से मनाया गया। दिनांक 27-12-2015 से 2-1-2016 तक प्रात: 5:00 से 7:30 बजे तक प्रभात फेरियां निकाली गई जिसमें सभी नगर निवासियों, परिवारों ने पूरा सहयोग दिया और पूरे उत्साह के साथ प्रभात फेरियों का स्वागत किया। ऋषि दयानन्द का गुणगान करते हुए सभी माताओं, बहनों और भाईयों ने सहयोग दिया और सभी परिवारों ने चाय और प्रसाद का लंगर लगाया। दिनांक 1 जनवरी से रात्रिकालीन सत्संग शुरू किए गए जिसका शुभारम्भ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के सुमधुर प्रभु भक्ति के भजनों द्वारा हुआ। स्त्री सभा की श्रीमती पुष्पा देवी, जीतो रानी, और गायत्री ने अपने मधुर भजन सुनाए। दिनांक 3-1-2016 रविवार को आर्य महासम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ सुबह 10:00 बजे हवन यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार शास्त्री एवं पं. मनोहर लाल आर्य थे और मुख्य यजमान श्री हरि प्रकाश जी, सुभाष गोरिया जी, योगराज जलोटा, श्री कमल भारती, श्री पूर्ण चन्द जी सपरिवार यजमान बनें। यज्ञ के ब्रह्मा ने सभी यजमानों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ के पश्चात ध्वजारोहण आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान बाबू सरदारी लाल जी आर्यरत्न के कर-कमलों द्वारा किया गया। सम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न की अध्यक्षता में हुआ। मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ माता सत्या देवी, माता कान्ता देवी स्त्री सभा भार्गव नगर के ऋषि दयानन्द जी के भजनों द्वारा किया गया। इसके बाद पं. सुरेश शास्त्री जी का सुन्दर प्रवचन हुआ और श्री जगत वर्मा जी ने अपने भजनों द्वारा ऋषि दयानन्द का गुणगान किया। पं. मनोहर लाल जी ने भजनों के द्वारा अपने विचार रखे। इसके बाद पं. विजय कुमार शास्त्री जी का सुन्दर प्रवचन हुआ। मंच का संचालन आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल ने किया। उत्सव की शोभा को बढ़ाने के लिए मन्त्री पंजाब सरकार भगत चुनी लाल जी भी पधारे और अपने बहुत सुन्दर विचार भी रखे। कार्यक्रम के अन्त में बाबू श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया और अपने सुन्दर विचारों द्वारा सबका मार्गदर्शन किया। प्रभातफेरियों का आयोजन करने वाले परिवारों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री राजिन्द्र विज कालिया कालोनी, श्री वेद आर्य जी, श्री सतपाल जी आर्य नगर अपने साथियों के साथ, श्री निर्मल कुमार बस्ती वावा खेल, श्री अमरनाथ प्रधान आर्य समाज गांधी नगर-2, श्री राजपाल प्रधान आर्य समाज गांधी नगर-1, श्री ओम प्रकाश प्रधान बस्ती वावा खेल, श्री राज कुमार प्रधान आर्य समाज भार्गव नगर, श्री जयचन्द प्रधान संत नगर, श्री बनारसी दास मन्त्री आर्य समाज गढ़ा दयानन्द चौक, श्री शिव सौनिक प्रधान मेन बाजार बस्ती दानिशमन्दा अपने-अपने साथियों सहित शामिल हुए। सभी महानुभावों, सारे आर्य भाई बहनों का प्रधान यशपाल जी ने बहुत-बहुत धन्यवाद किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समाज के सभी अधिकारियों एवं सदस्यों ने पूरा सहयोग दिया।

आर्य समाज लसूड़ी मुहाल्ल बस्ती दानिशमंदा जालन्धर के वार्षिक उत्सव पर ओ३म् ध्वज फहराते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य एवं आर्य समाज के सदस्य।

-कमल भारती महामन्त्री आर्य समाज

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।